Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
Vol - V Issue-IX SEPTEMBER 2018 ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

मानवीय मूल्यों की अवधारणा, स्वरूप तथा महत्व

डॉ. लियाकत मियाभाई शेख
लोकसेवा कला एवृं विज्ञान महाविद्यालय, औरंगाबाद (महा)

मनुष्य एक सामाजिक और चितंनशील प्राणी है । वह समाज का अभिन्न अंग होने के कारण आजीवन मूल्यों के साथ जीवन-यापन करता है । वस्तुतः मूल्यों का निर्माण सामाजिक मनुष्य करता है और मनुष्य ही उनका विस्तार कर अपने व्यावहारिक जीवन में उन्हें प्रयोग में लाता है मनुष्य की चिंतनशील तथा सामाजिक होने की प्रवृति ही नए मूल्यों को जन्म देती है । मनुष्य अपनी इसी प्रवृत्ती के कारण नए-नए विचारों, उपदेशों एवं अवधारणाओं को जन्म देता इस विचार या चिंतन को ही 'मूल्य' नाम से पहचाना जाता है । 'मूल्य' अपने आप में एक व्यापक शब्द है जो विविध विचारों और अर्थों को व्यक्त करता है । मूल्य का अर्थ, प्रकार और उसके स्वरूप का अध्ययन 'मूल्य मीमांसा' विज्ञान के अंतर्गत किया जाता है । 'मूल्य' शब्द अंग्रेजी के 'वैल्यू' ग्रीक में 'एक्सियस,' जर्मन में 'वैर्ट' और फ्रांसीसी में 'वालोर' नाम से पहचाना जाता है । व्युत्पति की दृष्टि से 'मूल्य' शब्द की उत्पत्ति 'मूल्+यत' से मानी गई जिसका अर्थ है । 'उखाड देने योग्य' या मोल लेने योग्य [1]

साहित्य में प्रयुक्त 'मूल्य' शब्द वस्तुतः अर्थशाला से आया है । अर्थशास्त्रीय शब्द 'मूल्य' जब मानवीय संवदेनाओं से जुड़ता तो उसमें भावनाओं के भांती ही कई गहन अर्थ उतर आते है । अतः 'मूल्य' एक अमूर्त अवधारणा है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति भोगता, अनुभव करता है । मूल्यों का संबंध हमारी आतंरिक चेतना भोगता, अनुभव करता है । मूल्यों का संबंध हमारी आतंरिक चेतना से होता है । 'मूल्य' सामाजिक चेतना और स्वास्थ समाज-जीवन के लिए वरदान होते है और इन्हीं मूल्यों पर समाज खड़ा होता है । एक प्रकार से मूल्य समाज-व्यवस्था का अलिखित संविधान माने जा सकते है, उसमें निहित विचारों से समाज एवृं मनुष्य जीवन में प्रकाश पाता है । मूल्यों का यही प्रकाश स्वस्थ समाज के निर्माण में सहायक बनता है । मूल्य सदैव आदर्श की बुनियाद पर खडे होकर सुसंस्कारीत समाज और आदर्श जीवन का मार्गदर्शन करते है । दूसरी और जीवन मूल्य हमारी व्यवहारिकता को प्रस्तुत करते है । मानवी मूल्य शाश्वत होते है । किंतु विशिष्ठ परिस्थितिओं मे उसमें परिवर्तन की संभावना होती है । वास्तव में मानवी मूल्य एक अवधारणा है जो आदर्श एवृं व्यावहारिक जीवन को सही दिशा दिखाते है । जो आदर्श एवृं व्यावहारिक जीवन को सही दिशा दिखाते है । सामान्यतः मूल्य के दो रूप दिखायी देते है 1.मानव-मूल्य 2. जीवन मूल्य और ये आदर्श जीवन का मार्गदर्शन करते है तथा जीवन-मूल्य हमारी व्यावहारिकता को प्रस्तुत करते है । वास्तव में मानव-मूल्य एक अवधारणा है, जो आदर्श एवृं व्यावाहारिक जीवन को सही दिशा दिखाते है । मूल्यों का निर्माण सामाजिक मनुष्य करता है और मुनष्य ही उनका विस्तार कर अपने व्यावहारिक जीवन में उन्हे प्रयोग में लाता है । अतः मानीवय मूल्यों को आज आत्मसात करने एवृं जानने की आवश्यकता है । आज हमारी सबसे बड़ी जरूरत मूल्यों के प्रति भावात्मक दृष्टिकोन की है । [2]

मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी होने के कारण वह अन्य प्राणियों की तुलना में अपना विशेष महत्व रखता है । वह अपने विवके और आत्मज्ञान के बल पर एक स्वतंत्र मार्ग का निर्माण का करता है, यही स्वतंत्र मार्ग उस व्यक्ति के जीवन में, उसके व्यक्तित्व में अहम तत्व, लक्ष्य या सबसे बड़ी उपलब्धि का प्रतिरूप होती है । और यही स्वतंत्र मार्ग उसका मूल्य है । दूसरे शब्दों में आत्मज्ञान, विवेव एवृं स्वतंत्रता की त्रिवेणी [3] ही मूल्य

बोध को जन्म देती है । मूल्यों के अंतर्गत जीवन लक्ष्यों और साध्य की खोज निरंतर चलती रहती है जो की विवके जनित तथा पूर्ण रूप से स्वतंत्र होती है । मूल्य-निर्माण में सम्यक ज्ञान और विवके की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है । परंपरा से, समाज से अथवा अपने परिवार से मनुष्य विचार प्राप्त करता है । सभी मूल्यों का आधार मानवीय विवके ही है । विवके विचारों को जन्म देता है, विचारों से धारणाएँ बनती है यही धारणाएँ युगानुरूप मूल्यों का रूप धारण करती है । वास्तव में मूल्यों का संबंध भूत, भविष्य एवं वर्तमान तीनों से है ।

'मूल्य समाज का दिशा -निर्देश करते हुए मनुष्य को जीने की राह दिखाते है । मूलतः मूल्य एक ऐसी धारणा है जो की मनुष्य से प्रारंभ होकर समाज की ओर अग्रसर होती है । सर्वप्रथम मूल्य समाज में विविध परिस्थितियों-राजनितिक, सामाजिक, आर्थिक आदि से प्रभावित होते हुए मूल्य-निर्माता या साहित्यकार के हदय में स्थापित हो जाते है । समाज में घटित घटनाओं को साहित्यकार देखता है तथा अनूभूत कर एक विचार को जन्म देता है । इन विचारों को परिष्कृत कर मूल्य निर्माता किसी अवधारणा का स्वरूप प्रदान करता है और यही अवधारणाएँ ही 'मूल्य' है । मूल्य निर्माता या रचनाकार अपनी कल्पना द्वारा ऐसी परिस्थिती का निर्माण कर मूल्य का सृजन करता है । मूल्य सदैव समान नहीं रहते, उनमें युग के अनुरूप कुछ नवीन तत्व जुडते जाते है । मूल्यों का निर्माण व्यक्ति-विशेष अथवा समाज-विशेष के अनुरूप किया जाता है, इनके निर्माण में संस्कृति और परंपरा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है । इसी कारण मूल्य निर्माता को सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक बोध होना जरूरी है । हिंदी के प्रसिध्द चिंतक कवि रामधारी सिंह दिनकर मूल्य, नैतिकता परंपरा एंव संस्कृति को पर्याय मानते हुए कहते है कि 'मूल्य आचरण के सिध्दांत को कहते है । मूल्य वे मान्यताएँ है जिन्हें मार्गदर्शन ज्योति मानकर सभ्यता चली आ रही है और जिसकी उपेक्षा करने वालों को परंपरा अनैतिक, उच्छृखंल या बागी कहते है । किंतु कभी कभी ऐसा भी होता है की पुराने मूल्यों को अपनाने पुरूष भगवान बन जाते है ।[4] समाज तथा व्यक्ति के सम्मुख मूल्य- निर्माता के लिए परंपरा और संस्कति कच्चे माल के समान है । जिसका अपने अनुरूप उपयोग कर मानव विविध मूल्यों का सृजन करता है । मूल्य वस्तुतः एक अत्यंत व्यापक शब्द है जो अर्थशास्त्र से निकला है किंतु विविध विषयों से संलग्न होकर व्यापक अवधारणा के रूप में सामने आता है । मूल्य शब्द में विविध विषयों के प्रभाव को देखा जा सकता है । 'मूल्य' शब्द का अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान के अतिरिक्त नीतिशास्त्र, समाजशास्त्र और अन्य सामाजिक विज्ञानों में तो प्रयोग हुआ ही है, साहित्य व आलोचना के क्षेत्र में इसे स्वीकृति प्राप्त हुई है । इस संदर्भ में कहा जा सकता है कि मूल्य का संबंध किसी एक विषय से न है और न ही इसका विशिष्ट अर्थ है । भिन्न व्यक्ति, भिन्न संदर्भ में, भिन्न अर्थ रूप में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है । 'मूल्य' अपनी व्यापकता के कारण रूढ शब्द हो गया है । 'मूल्य' का मानव जीवन में एक विशेष स्थान है । मूल्यों के आधार पर मनुष्य तथा पशु में भेद किया जा सकता है । जीवन मूल्य आदर्शों और मानदंडो के सहयोग से बन जाते है और पुरे जीवन को प्रभावित, परिचालित, नियंत्रित करते है । मूल्यों की प्रकृती समष्टिगत तथा व्यक्तिगत दोनों ही प्रकार की होती है । 'मूल्य' मानव को प्राप्त परंपरागत समाज द्वारा दी गई वे मान्यताएँ, अवधारणाएँ अथवा वैचारिक इकाई है । जिनमें आदर्श, अनुभूति, मानवीय संवदेना, उपयोगिता तथा प्रेरणा का समावेश रहता है, जिनके आधार पर न केवल व्यक्ति का जीवन उन्नत, उद्दात तथा समृध्द बनता है, प्रत्युत अंतरीकरण की प्रक्रिया से समाज प्रगति-पथ पर अग्रसर होता है ।[5]'

अर्थशास्त्र ये आयातित शब्द 'मूल्य' नितिशास्त्र में प्रवेश करते ही हमारी मानवीय संवेदनाओं से जुड़ जाता है । मानव द्वारा ही विविध अनुभवों से नीति का जन्म होता है । नीति प्रायः सत्य पर आधारित होती है । नीति से जुडते ही मूल्य भी हमारे अनुभव एंव हमारे आदर्शो का रूप धारण कर लेते है । नीति की दृष्टि में यही सत्यता मूल्यों को मूल्यवान बनाती है । मूलतः नीतिशास्त्र किसी वस्तु या व्यवहार जो की अच्छे- बुरे

वांछनीय या तद्स्वरूप है के प्रति विचार को मूल्य मानता है ।[6] समाज ही मूल्यों का मुख्य स्त्रोत है क्योंकि मूल्य समाज में ही विकसित होते है । अतः मूल्यों की गतिशीलता भी समाज पर आधारित है । व्यक्ति का व्यक्ति से समूह का समूह से जो संबंध होता है वह, सामाजिक मूल्यों द्वारा ही नियंत्रित एवं् निर्दिष्ट होता है । प्रत्येक समाज का संचालन 'मूल्य ही करते है । बदलते परिवेश में समाज मूल्यों का विकास करता है जिससे सामाजिक संबंध विकसित होते है ।

मनुष्य जीवन में मूल्यों का अपना महत्त्व है और उसकी अपनी एक नियत व्यवस्था होती है । भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने मूल्यों पर विस्तारपूर्वक चिंतन एवं् विवेचन किया है । मूल्यों की जड़े बहुत गहरी होती है, जो कि समाज की रीढ़ है, सामाजिक मूल्यों द्वारा ही व्यक्ति अपना जीवन निर्दिष्ट मार्ग पर ले चलता है । भारतीय चिंतन पंरपरा अत्यंत प्राचीन, विस्तृत तथा वैविध्यपूर्ण है । संस्कृत साहित्य इसका उत्तम उदाहरण है । भारतीय चिंतन पंरपरा को गोविंद चंद्र पांडे जी ने भारतीय सांस्कृतिक-आध्यात्मिक विचारधारा के नाम से पुकारा है ।[7] इस युग में 'मूल्य' का पृथक चिंतन न कर आध्यात्मिक चिंतन के रूप में ही इसे प्रस्तुत किया गया । इस चिंतन परंपरा के विविध चरण देखे जा सकते है । सांस्कृतिक आध्यात्मिक चेतना के प्रथम चरण में मूल्य को आनंद तथा कल्याण का प्रतिरूप मानकर मूल्य चिंतन को मनुष्य की प्रेरणा के रूप में उभारा है । इसका दूसरा चरण महात्मा बुध्द के अविर्भाव से माना जाता है, इसमें दुख को चरम मूल्य स्वीकार किया गया तथा संपूर्ण संसार का सत्य दुख ही माना गया साथ ही इस युग में 'पुरूषार्थ चतुष्टय' की अवधारणा भी अंकुरित हुई । भारतीय चिंतन का तिसरा चरण मधुसुदन सरस्वती की रचना 'भक्ति रसायन' से मानी जाती है । इसमें रस की अवधारणा द्वारा आध्यात्मिक चिंतन की बात कही गई । वस्तुतः भारतीय चिंतन में 'पुरूषार्थ चतुष्टय' को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया । पुरूषार्थ चतुष्टय की अवधारणा से जीवन के लक्ष्यों का निर्धारण किया गया । इन चारों पुरूषार्थो के द्वारा भारतीय संस्कति में भौतिक तथा अध्यात्मिक दोनों विचारों को उचित स्थान मिला । धर्म भारतीय संस्कृति का अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंग एंव् मूल्य है । धर्म के अभाव में जीवन की सारी गति व्यर्थ है । दूसरा महत्त्वपूर्ण पुरूषार्थ अर्थ है जिसे एक साधन के रूप में पहचाना जाता है । इसके द्वारा भौतिक सुखों और आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है । यह जन-जन को संपन्नता एंव् शक्ति प्रदान करता है । किंतु अर्थ की सार्थकता धर्मयुक्त होने में है । तीसरा पुरूषार्थ 'काम' है । सामान्यतः यह काम इंद्रिय सुख या यौन प्रवृतियों की संतुष्टि मात्र है । इसका विस्तृत एवं वास्तविक अर्थ मनुष्य के समस्त कार्यों इच्छाओं एवं् प्रवतियों को वर्णित करता है । काम यदि धर्मयुक्त हो तभी वह साधन के रूप में माना जा सकता है । काम के ही कारण मनुष्य कर्तव्योन्मुख होता है । इसी कारण काम को समस्त इच्छाओं एवं् कामनाओं का घनीभूत रूप कहा गया है । मोक्ष चतुर्थ पुरूषार्थ है जिसे मानव-जीवन ने सर्वोच्य माना गया है । मोक्ष से तात्पर्य मुक्ति है जो कि मृत्यु के पश्चात् प्राप्त होती है किंतू यह सत्य नहीं है मुक्ति का मूल अर्थ है जीवन के सभी कार्यों को निर्लिप्त भाव से संपन्न कर ज्ञान एवं् भक्ति के द्वारा मुक्त दशा को प्राप्त होकर आनन्दमयी जीवन जीना । मोक्ष जीवित व्यक्ति का मूल्य है जिसका आनंद इसी जीवन में लिया जा सकता है ।

भारतीय चिंतन परंपरा में पुरूषार्थ एक साधना के रूप में हमारे सामने आता है । भारतीय पारंपारिक विचारधारा में ईश्वरवादी चिंतन को प्रमुखता दी गई । इस चिंतन में मानवता की तो बात कही गई किंतु इसमें मनुष्य अनुपस्थित दिखाई देता है । पाश्चात्य चिंतन के प्रभाव स्वरूप मनुष्य चिंतन के केंन्द्र में आ गया तथा मूल्य संबंधी मत मानव के स्थान पर व्यक्ति विशेष के केंद्र में रखा गया । बदलते परिवेश ने चिंतको की दृष्टि परमात्मा के स्थान पर मुनष्य पर केन्द्रीत हुई और उन्होंने मूल्यों का मानवीय रूप चित्रित किया । यहॉ मूल्यों का निर्माता ईश्वर न होकर मनुष्य है । मानव स्वयं ही मूल्यों का अन्वेषन, संरक्षण एंव् चयन करता है । इस संबंध में अनेक भारतीय विद्ववानों ने अपने विचार प्रस्तुत किए है इनमें डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित, डॉ. जगदीश

गुप्त, तथा गिरिराजकुमार माथुर आदि कुछ उल्लेखनीय है । आधुनिक विद्ववानों का मानना है की मूल्य मूर्त वस्तु नहीं अपितु एक धारणा है, एक अनुभव है जिसे व्यक्ति अपनाता है और व्यवहार में लाता है । वास्तव में मानव-मूल्य मानव अस्तित्व, पहचान और उसके स्वरूप की व्याख्या करते है । इस प्रकार स्पष्ट है कि मूल्य संबंधि भारतीय दृष्टि वैविध्यपूर्ण है । एक और जहॉ भारतीय चिंतन ईश्वरवादी रहा है वही आधुनिक चिंतको की दृष्टि के केंद्र में मानव है ।

भारतीय चिंतको के समान ही पाश्चात्य चिंतकों के भी मूल्य संबंधी विचारों में विविधता दिखाई देती है । पाश्चात्य चिंतको में प्लेटो तथा अरस्तु महत्त्वपूर्ण है । प्लेटो ने मूल्यों की दर्शनिक व्याख्या की और उसे आदर्श के साथ जोडकर स्वरूपगत सत्य माना है । प्लेटों सत्, श्रेय, एवं सौन्दर्य के अभिन्न रूप को मूल्ये मानते है । जबकि उनके शिष्य अरस्तू ने मूल्यों की सौन्दर्यशास्त्रीय व्याख्या की, उनके विचार है कि मूल्य सत्ता अवश्य है किंतु उसकी मूल्यसत्ता उसकी उर्जा में ही निहित है अरस्तू मूल्य के विवेक को महत्वपूर्ण मानते है तथा साथ ही सत् श्रेय, एवं सौन्दर्य को पृथक-पृथक मानकर उसकी पृथक रूप में व्याख्या करते है ।

युनानी चिंतन पंरपरा में विविध विचार धाराऍं दिखाई देती है । इनमें स्टोईक तथा एपिक्यूरम की विचारधाराऍं अपना महत्व रखती है । इन्होंने मूल्यों की आध्यात्मिक व्याख्या की तथा साथ ही समाज से भी मूल्यों को जोडा जिससे कि दुख, ज्ञान जैसे मूल्य उभरे । इस प्रकार स्पष्ट होता है कि युनानी परंपरा समाज एंव् लोक को अध्यात्म के साथ लेकर चलती है इसी कारण भौतिकवादी मूल्यों को पहले स्थान प्राप्त हुआ ।[8] समय परिवर्तनशील होता है अतः चिंतन में भी परिवर्तन आ जाते है । पुनर्जागरण काल में मूल्यों में भी परिवर्तन हुए । अस्तित्वाद, मार्क्सवाद जैसी नई विचारधाराओं का जन्म हुआ जिसने मूल्यों को एक नवीन दृष्टि प्रदान की । मार्क्स ने अर्थ को आदिम मूल्य स्वीकार किया । सारांशतः कहा जा सकता है की पाश्चात्य चिंतन आध्यात्मिक सौन्दर्यमयी दृष्टिकोन से मानवतावादी दृष्टिकोन की और उन्मुख होता हुआ दिखाई देता है । मूल्य संबंधी आधुनिक अवधारणा का मानना है की मूल्य वह तत्व है जो मानवीय चेतना का निर्माण करती है और जो मानवीय चिंता के लिए मनुष्य को गतिशील रखती है ।

उपर्युक्त भारतीय एवं् पाश्चात्य मतों के अध्ययन से पता चलता है की भारतीय चिंतन में विविधता के दर्शन होते है यहॉ अध्यात्मिक चिंतन से मानवतावदी चिंतन की और बढ़ता दिखाई देता है ठीक उसी प्रकार पाश्चात्य चिंतन भी सौन्दर्यवादी दृष्टि से मानवतावादी दृष्टि उसी प्रकार पाश्चात्य चिंतन भी सौन्दर्यवादी दृष्टि से मानवतावादी दृष्टि की और बढ़ता हुआ दिखाई देता है । मूल्य मानवीय विवेक एवं् विचारों का समुह है । मानवीय विवेक का जन्म आंतरिक अनुभवों के आधार पर होता है । अनुभव एवं् भावनाऍं सदैव एक समान नहीं रहती, यही कारण है की मूल्य भी हमेशा स्थिर नहीं रहते उनमें परिवर्तन होता रहता है । युगानुरूप परंपराओं में परिवर्तन होने से युगीन मूल्यों में परिवर्तन या नविनता आ जाती है । संक्षेप में कहा जा सकता है कि, मूल्य सांस्कृतिक बोध से युक्त विचारों एवं् अनुभवों का विवेकजनित रूप है ।

मूल्यों का मानवीय जीवन से घनिष्ट संबंध है । मानव-जीवन मूल्यों से नियंत्रित होता है । मानवीय मूल्यों में जीवन की सार्वभौम, संवदेना और प्रयोजनशीलता को स्वीकार किया जाता है । यही जीवन मूल्य साहित्य में सौंदर्य, शिवत्व एंव् सत्य के रूप में अभिव्यक्ति पाते है । साहित्य की मूल्यवता उसके स्वरूप के साथ साथ उसके व्यापक प्रयोजन में निहित होती है । साहित्य की कोई भी प्रवृति या कोई भी कृति अपने निरपेक्ष या असंपृक्त प्रवति या कृति नहीं होती । उसके पीछे एक लंबी साहित्य परंपरा होती है ।

जीवन-मूल्य साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण निकष है । व्यक्ति के माध्यम से सामाजिक धारणाऍं जीवन मूल्य बनकर साहित्य में बिम्बो, और प्रतिकों के आश्रय से प्रत्यक्ष होती है । साहित्य कें जीवन-मूल्य जीवन कि उस मूल्यवत्ता प्रतीक है । वाल्मिकी ने अपने साहित्य में जीवन-मूल्यों की प्रतिष्ठा की । प्राकृत और अपभ्रंश

साहित्य में भी उन जीवन-मूल्यों की प्रतिष्ठा हुई है । जो व्यक्ति के आत्मिक विकास में सहायक है, जिनसे समाज का नैतिक आधार दृढ़ होता है । भक्तिकालीन साहित्य में जीवन मूल्यों की स्थापना के पीछे समन्वत्मक और आध्यात्मिकता की प्रधानता रही है । इस साहित्य में ऐसा नैतिक चिंतन है, जो परिवार, समाज तथा मानवीय संबंधो का आदर्श रूप प्रकट करता है । युग, जीवन, और सामाजिक संदर्भों में मूल्यों का स्वरूप भी सतत् परिवर्तनमान रहा है । नया युग, नई भावभूमि साहित्यकार की चेतना को नया मोड देते है । वह युग समाज और समयानुरूप नवीन जीवन-मूल्यों की सर्जना करता है । आज की भौतिकवादी युग में समाज के समग्र आयामों में मूल्य-क्रांति सी आ गई है । प्राचीन मूल्यों के प्रति विद्रोह तथा नवीनता का आग्रह बढता जा रहा है । समाज के बदलते स्वरूप का प्रतिफलन साहित्य में भी हो रहा है । नवयुगीन नव चेतना के आलोक में परंपरा, संस्कारों और विश्वास पर आधारित जीवन मूल्यों का विघटन होने लगा । नैतिक मान्यताओं के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ । हार्दिकता का स्थान बुध्दि और तर्क ने ले लिया । तार्किक - दृष्टि ने परंपरागत शाश्वत जीवन मूल्यों सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, नैतिकता, आस्था आदि को अस्वीकृत नवीन जीवन दृष्टि के आलोक में नवीन मूल्यों की स्थापना की । भारतीय अध्यात्मवाद तथा मानवतावाद में जिन आदर्शो त्याग, तपस्या, प्रेम, संयम, सहिष्णुता, अहिंसा, सत्य तथा समष्टिगत कल्याण के मूल्यों को जीवन के उन्नयन के लिए श्रेष्ठ माना जबकि आधुनिक साहित्यकारों तथा चिंतको ने उसे त्याग कर, तथा उन्हें संस्कारित कर युगानूरूप न्यये मूल्यों की स्थापना की । जीवन के समान ही जीवन मूल्यों की प्रकृति भी गतिमान है जीवन में परंपरागत मूल्य जब गति व स्फूर्ति देते हुए प्रतीत नहीं होते तब युग समाज और साहित्यकार समयानुरूप नवीन मूल्यों की सर्जना करत है । आदर्श और यथार्थ आस्था और विश्वास एवं बौध्दिकता के समन्वयक के आधार पर नवीन जीवन मूल्यों की स्थापना हुई । पश्चिमी भौतिक और बौध्दिक जीवन-दृष्टि ने नवीन विचार धाराओं को जन्म दिया । साहित्यकार को ऐसे साहित्य की रचना करनी होगी, जो जीवन में उदात्त मूल्यों की स्थापना कर सके ।

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि मूल्य और जीवन का पारस्पारिक घनिष्ट संबंध है । जीवन को आदर्श की और ले जाने भौतिक स्थिती से अध्यात्मिक स्थिती में पहुचाने और सुनियोजित कर्म की प्रेरणा देनेवाले प्रेरक तत्व 'मूल्य' है । मूल्य ही व्यक्ति तथा समाज के अस्तित्व एवं उसके विकास के विधायक तत्व होते है । ये सामाजिक आवश्यकताओं, सामान्य जन के कल्याण एवं लोकहित में साधक होते है । मूल्य समाज के वे आधार स्तंभ है, जिन पर समाज की सभ्यता एवं संस्कृति का भव्य भवन खडा है ।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

1) वामन शिवराम आपटे, संस्कृत हिंदी कोश, पृ.812 मुंबई, 1921 ।
2) गोविंद चंद्र पांडे, मूल्य मीमांसा, पृ.8, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण, 1989 ।
3) गोविंद चंद्र पांडे, मूल्य मीमांसा, पृ.31, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण, 1989 ।
4) रामधारी सिंह दिनकर, आधुनिक बोध, पृ.48, नेशनल पंजाबी प्रकाशन दिल्ली, 1960 ।
5) संपा. गिरीराजशरण अग्रवाल, शोध दिशा, हिंदी साहित्य निकेतन बिजगौर, दिसंबर 2017 ।
6) आनंद प्रकाश दीक्षित, स्वाधीनताकालीन हिंदी-साहित्य के जीवन मूल्य, पृ.4, संपादक, रामगोपाल शर्मा, प्रथम संस्करण, 1982 ।
7) गोविंद चंद्र पांडे, मूल्य मीमांसा, पृ.8, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण, 1989
8) डॉ. वीरेन्द्र मोहन, भक्ति काव्य और मानव मूल्य, पृ.14 प्रथम संस्करण, 1985 ।